ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 172-176
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

सामाजिक–आर्थिक स्तर, स्कूल व लिंग के संदर्भ में किशोरों के आत्म–प्रत्यय एवं अवधारणा प्राप्ति का अध्ययन

1. तमन्ना अनवर
2. डॉ0 जेबा

1. शोध अध्येत्री, 2. एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष– मनोविज्ञान विभाग राँची विश्वविद्यालय, राँची (झारखण्ड), भारत

Received-10.09.2023, Revised-16.09.2023, Accepted-20.09.2023 E-mail: tamannaanwar44@gmail.com

सारांश: ***किशोरावस्था के संदर्भ में सभी मनोवैज्ञानिक एवं शिक्षाविद एकमत है कि यह मानव विकास की सबसे महत्त्वपूर्ण अवस्था होती है। जीवन के महत्वपूर्ण निर्णय लेने के साथ ही साथ यह अवस्था आश्रित जीवन में स्वतंत्र जीवन की ओर गमन की भी एक कोटिक अवस्था है। जीवन की चुनौतियों को समझना और उनके समाधान के प्रति तैयार होना साथ ही साथ सफलता–असफलता जैसी विरोधाभासी स्थितियों का सामना करने के कारण ही प्रायः किशोर द्वन्द्वात्मक परिस्थितियों से गुजरता है। ऐसी परिस्थितियों में उसका आत्म–प्रत्यय उसके मानसिक एवं सामाजिक अगलाव की तरफ उसके साथ होता है। यद्यपि इस अवस्था तक आते–आते आत्म–प्रत्यय स्पष्ट होने लगते हैं, परन्तु इनमें पुनर्निमाण एवं पुनसंगठन की प्रक्रिया चलती रहती है। आत्म–प्रत्यय के साथ ही साथ उसकी स्वयं एवं जगत के प्रति अवधारणाएँ भी इसके निर्णयों में महती भूमिका अदा करती है। अवधारणा प्राप्ति एवं आत्म–प्रत्यय जैसे अनेक व्यक्तिगत विशेषताओं के विकास एवं पुर्नसंगठन के उसके लिंग, सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं स्कूल के प्रकार का प्रभाव पड़ता है।***

कुंजीभूत शब्द– किशोरावस्था, मनोवैज्ञानिक, शिक्षाविद, स्वतंत्र जीवन, कोटिक अवस्था, समाधान, द्वन्द्वात्मक परिस्थितियों, मानसिक।

प्रस्तुत अनुसंधान इस जिज्ञासा की संतुष्टि के लिए एक प्रधान स्वरूप होगा कि सामाजिक–आर्थिक स्तर लिंग एवं विद्यालय के प्रकार का प्रभाव किशोरों के आत्म–प्रत्यय एवं उसके अवधारणा प्राप्ति को किस प्रकार प्रभावित करता है। अध्ययन के परिणामों का प्रयोग किशोरों को और अधिक समझने एवं उनके विकास की प्रक्रिया के लिए आवश्यक व्यूह रचना करने में भी पर्याप्त सहायक होगा।

समस्या कथन– "सामाजिक–आर्थिक स्तर स्कूल, लिंग के संदर्भ में किशोरों के आत्म–प्रत्यय एवं अवधारणा प्राप्ति का अध्ययन।"

सामाजिक–आर्थिक स्तर– सामाजिक–आर्थिक स्तर विकिपीडिया के अनुसार, सामाजिक–आर्थिक स्तर किसी व्यक्ति एवं उसके परिवार की सामाजिक एवं आर्थिक संकलित स्थितियों को एक साथ प्रदर्शित करता है, जिससे उसकी तुलना समाज में अन्य लोगों के सापेक्ष की जा सके। जब किसी व्यक्ति की सामाजिक–आर्थिक स्तर का मापन किया जाता है तो उसके पारिवारिक आय, शिक्षा का स्तर, उसके व्यान स्तर उपयोग में आने वाली भौतिक वस्तुएँ आदि को सम्मिलित किया जाता है। सामाजिक–आर्थिक स्तर व्यक्तिगत स्तर पर एवं पारिवारिक स्तर पर आर्थिक विभिन्नता को प्रदर्शित करने वाला बहुधा प्रयोग में आने वाला एकएक माप है।

आत्म–प्रत्यय– आत्म–प्रत्यय स्वयं के बारें में बनाई गया एक स्वरचित चित्र है। आत्म–प्रत्यय समय एवं परिस्थिति के साथ निर्मित एवं पुनर्निर्मित होता रहता है आत्म–प्रत्यय रूपी स्वचित्र वैसे तो अनेक विधियों से निर्मित होता है, परन्तु यह हमारे जीवन के महत्वपूर्ण लोगों के साथ सम्बन्धों एवं उनके प्रभावों के कारण अधिकतर रचित एवं पुनर्रचित होता है। रिचार्ड क्रिस्प एवं रीनन टर्नर द्वारा लिखित के श्नमदजपंसˆवबपंस च्ेलबीवसवहल अनुसार' व्यक्ति को व्यक्तिगत विशेषताएँ एवं गुण तथा उसके व्यक्तित्व गुण उसको समाज के अन्य लोगों से अलग करते हैं।

आत्म–सम्बन्ध हमारे अपने सम्बन्धों जैसे पत्नी, बच्चों, माता, पिता के साथ हमारे सार्थक सम्बन्धों पर निर्भर करता है। हम पूरी तरह अपने सामाजिक संस्थाओं के साथ सहभागिता एवं उसकी अवस्था के कारण सम्पूर्ण रूप से समझे जाते हैं। आत्म–प्रत्यय को सम्पूर्णता में देखे तो कहा जा सकता है कि आत्म–प्रत्यय हमारे उन विश्वासों एवं अन्य लोगों के द्वारा हमें दी गयी प्रतिक्रियाओं का संकलन है जो हम ग्रहण करते हैं। आत्म–प्रत्यय मूलतः उन प्रश्नों का उत्तर देता है जो मैं कौन हूँ? से सम्बन्धित होते है।

अवधारणा प्राप्ति– अवधारणा प्राप्ति जेरोम बनर (1956) के कार्यों से निर्मत सीखने एवं सिखाने का एक रचनात्मक उपागम है। इस मॉडल में छात्र किसी सम्प्रत्यय (अवधारणा) को विशेषता या उसके लक्षणों को पहचानने के लिए अपने पूर्व समग्र एवं अनुभव का प्रयोग करके तुलनात्मक क्रियाओं एवं भेद पहचानने की प्रक्रियाओं को करता है। यह रचनात्मक उपागम छात्रों को निर्मनलिखत अवसर प्रदान करता है–

- प्रासंगिक एवं अप्रासंगिक सूचनाओं के मध्य विभेद करना।
- अवलोकन वर्गीकरण एवं परिकल्पना निर्माण
- नवनिर्मित अवधारणा के साथ पुरानी सूचनाओं का संयोजन
- आगमनात्मक चिन्तन

साहित्य समीक्षा–

वच व रामाकृष्णन् (2005) ने माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालयी अभिप्रेरणा का बुद्धि, आत्म–प्रत्यय, कक्षाकक्ष वातावरण एवं अभिभावक संलग्नता में सम्बन्ध नामक विषय पर शोध कार्य किया। निष्कर्ष में पाया गया– विद्यालयी अभिप्रेरणा का बुद्धि, आत्म–प्रत्यय, कक्षाकक्ष वातावरण, अभिभावक संलग्नता एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर में धनात्मक एवं सार्थक सम्बन्ध पाया गया। आत्म–प्रत्यय के सम्बन्ध में निम्न मध्यम एवं उच्च विद्यालयी अभिप्रेरणा वाले विद्यार्थियों में सार्थक अन्तर पाया गया।

नद साहेबलाल महबूब (2011) ने माध्यमिक शिक्षक प्रशिक्षण के वातावरण जागरूकता का अध्ययन एवं उनके भौगोलिक, व्यक्तित्व गुणों, आत्म प्रत्यय एवं अध्ययन आदत से सम्बन्ध का अध्ययन किया। न्यादर्श के रूप में 400 माध्यमिक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

का चयन कर्नाटक विश्वविद्यालय से किया गया। उपकरण के रूप में वातावरण जागरूकता के लिए शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया। व्यक्तित्व गुणों के लिए कैटेल 16 पी0एफ0, आत्म प्रत्यय के लिए स्वयं शोधकर्त्ता द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया गया तथा अध्ययन आदत को मापने के लिए मुखोपाध्याय एवं सन्सवाल द्वारा निर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष के रूप में पाया कि व्यक्तित्व के गुणों अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी तथा निम्न एवं उच्च अध्ययन आदत वाले शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के वातावरण जागरूकता में अन्तर पाया गया। निम्न एवं उच्च आत्म प्रत्यय तथा निम्न एवं उच्च अध्ययन आदत वाले शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के वातावरण जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

सरिन्स् ए.एस. असल एवं विमला. ए. (2015) ने हाईस्कूल विद्यार्थियों के आत्म–प्रत्यय एवं अभिप्रेरणा का अध्ययन किया। अध्ययन में 170 छात्र एवं 80 छात्राओं का चयन कर राजकुमार सारस्वत द्वारा श्सेल्फ कन्सेप्ट कोशनाइयरश एवं बी.पी. भार्गव द्वारा निर्मित एचियमेण्ट मोटिव टेस्टश का प्रयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि–

हाईस्कूल के छात्राओं में अभिप्रेरणा छात्रों की अपेक्षा उच्च पाया गया।

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में अभिप्रेरणा अर्द्ध–शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च पाया गया।

सरकारी एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों में अभिप्रेरणा शासकीय विद्यालयों की अपेक्षा उच्च पाया गया।

विद्यार्थियों के आत्म–प्रत्यय एवं अभिप्रेरणा में सकारात्मक एवं सार्थक सम्बन्ध पाय गया।

डोगरा, रहमतु अब्दुल्लाह (2015) के जरिया महानगर के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक वातावरण समर्थन, शैक्षिक आत्म–प्रत्यय एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि– माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के श्सामाजिक वातावरण समर्थन एवं शैक्षिक आत्म–प्रत्यय के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक वातावरण समर्थन की विमा अभिभावक समर्थन एवं शिक्षक समर्थन का शैक्षिक आत्म–प्रत्यय के मध्य धनात्मक गृहसम्बन्ध पाया गया। अध्ययन में पाया गया कि सामाजिक वातावरण शैक्षिक आत्म–प्रत्यय एवं शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि करता है।

गोनी एवं बेलो (2016) ने ब्रोनो स्टेट कॉलेज ऑफ एजूकेशन में छात्रों के सामाजिक–आर्थिक स्तर, स्व–सम्प्रत्यय, लिंग विभिन्नताओं एवं शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि छात्रों के लिंग भिन्नता एवं स्व–सम्प्रत्यय के मध्य कोई – सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात् स्व–सम्प्रत्यय एवं भिन्न लिंग वाले छात्रों की शैक्षिक सम्प्राप्ति समान पायी गयी।

बंसल, आदित्य (2016) ने किशोरों के पारिवारिक वातावरण एवं स्व–प्रत्यय के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन किया। निष्कर्ष के रूप में पाया।

किशोरों के पारिवारिक वातावरण एवं स्व–प्रत्यय के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।

लिंग के आधार पर पारिवारिक वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

लिंग के आधार पर स्व–प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

हाफिज (2018) ने कश्मीर घाटी के नवोदय विद्यालय स्कूल के उच्च एवं निम्न सृजनात्मकता वाले विद्यार्थियों के अधिगम शैली एवं आत्म–सम्प्रत्यय का अध्ययन नामक विषय पर अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि उच्च सृजनात्मकता वाले विद्यार्थियों में आत्म–सम्प्रत्यय निम्न सृजनात्मकता वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक थी तथा उच्च सृजनात्मकता वाले विद्यार्थियों सर्किक एवं प्रतियोगिता में खोज एवं स्पष्टता पायी गयी। निम्न सृजनात्मकता वाले विद्यार्थियों में .श्य प्रदर्शन के साथ–साथ अध्ययन आदत में धीमी उपलब्धि पायी गयी।

मुस्ताक, सबरीना एवं रानी, गीता (2018) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक परिपक्वता एवं आत्म–प्रत्यय का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया। निष्कर्ष में पाया कि– माध्यमिक स्तर की छात्राओं में सामाजिक परिपक्वता, आत्म प्रत्यय तथा शैक्षिक उपलब्धि छात्रों की अपेक्षा उच्च पायी गयी। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक परिपक्वता एवं शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक तथा सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।

शुक्ला, बाल गोविन्द (2017) ने स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों के भाषायी सम्प्रत्यय निर्माण योग्यता का उनके अध्ययन आदत से सम्बन्ध का एक अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि–

स्नातक स्तर पर कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग विद्यार्थियों के भाषायी सम्प्रत्यय निर्माण योग्यता में सार्थक अन्तर है अर्थात् कला वर्ग के विद्यार्थियों के भाषायी सम्प्रत्यय निर्माण योग्यता विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है।

स्नातक स्तर पर कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग विद्यार्थियों के अध्ययन आदत में सार्थक अन्तर है अर्थात् विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में अध्ययन आदत कला वर्ग के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है।

स्नातक स्तर पर शहरी क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्र विद्यार्थियों के भाषायी सम्प्रत्यय निर्माण योग्यता में सार्थक अन्तर है अर्थात् शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के भाषायी सम्प्रत्यय निर्माण योग्यता ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है।

सिंह एवं सिंह (2017) ने रीवा संभाग में शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्रों की आत्म–सम्प्रत्य एवं उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्रों की आत्मसम्प्रत्य एवं शैक्षणिक उपलब्धि में अन्तर है अर्थात् शासकीय विद्यालयों के छात्रों की आत्मसम्प्रत्यय एवं शैक्षणिक उपलब्धि अशासकीय विद्यालयों के छात्रों की अपेक्षा उच्च पाया गया। जबकि उच्च आत्मसम्प्रत्यय वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि उच्च पायी गयी।

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

कौर, देवेन्द्र (2018) ने माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम विद्यार्थियों के आत्म–सम्प्रत्यय, सामाजिक अभिक्षमता तथा समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया। न्यादर्श के रूप में श्रीगंगानगर व हनुमानगढ़ जिले के हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के 640 विद्यार्थियों को चयन क्षेत्र के आधार पर किया गया। उपकरण के रूप में डॉ० राजकुमार सारस्वत द्वारा निर्मित श्आत्म–प्रत्यय प्रश्नावली शर्मा, शुक्ला एवं शुक्ला द्वारा निर्मित सामाजिक अभिक्षमता मापनी एवं सिंह एवं गुप्ता द्वारा निर्मित श्माध्यमिक विद्यालय सामाजिक प्रमापनी का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष में पाया माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम विद्यार्थियों के समायोजन का स्तर लगभग समान है

शोध उद्देश्य –

1. किशोरों के आत्म–प्रत्यय पर सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन करना ।
2. किशोरों के अवधारणा प्राप्ति पर सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन करना ।
3. किशोरों के आत्म–प्रत्यय पर स्कूल के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. किशोरों के अवधारणा प्राप्ति पर स्कूल के प्रभाव का अध्ययन करना।
5. किशोरों के आत्म–प्रत्यय पर लिंग के प्रभाव का अध्ययन करना।
6. किशोरों के अवधारणा प्राप्ति पर लिंग के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध प्रश्न–

1. क्या सामाजिक–आर्थिक स्तर के वैभिन्य से किशोरों का आत्म–प्रत्यय प्रभावित होता है?
2. क्या सामाजिक आर्थिक स्तर पर किशोरों के अवधारणा प्राप्ति को प्रभावित करता है?
3. क्या स्कूल का प्रकार किशोरों के आत्म–प्रत्यय को प्रभावित करता है?
4. क्या स्कूल के आधार पर किशोरों के अवधारणा प्राप्ति को प्रभावित करता है?
5. क्या किशोरों एवं किशोरियों के आत्म–प्रत्यय में अन्तर होता है?
6. क्या लिंग के आधार पर किशोरों के अवधारणा प्राप्ति को प्रभावित करता है?

शोध में निहित अभिप्रेरणा– शोधकर्त्री उस आयु वर्ग को अपने अध्ययन हेतु चुनना चाहता है जिससे स्वयं वो गुजर चुका है। शोधकर्ता ने अपने अध्ययन काल में कुछ एक अनुभवों को आधार बनाकर शोध के विषय क्षेत्र का चयन किया। आत्म–प्रत्यय एवं अवधारणा प्राप्ति स्वयं में अत्यधिक महत्वपूर्ण चर है एवं किशोरावस्था में इनकी भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण हो जाती है। अतः विभिन्न आयामों के आधार पर शोधकर्ता यह जानने को प्रेरित हुआ कि किशोरों की उपर्युक्त विशेषताओं में किस प्रकार से भिन्नता होती है।

शोध अभिकल्प एवं प्रविधि– शोध अभिकल्प– शोध अभिकल्प के अन्तर्गत क्रमबद्ध रूप से प्रत्येक सोपान के सम्बन्ध में विवरण दिया जाता है, जिसे शोध प्रक्रिया कहते हैं। शोध अभिकल्प में अनुसंधान के प्रमुख पक्षों के आधार पर ढाँचा विकसित किया जाता है, जिसमें तार्किक क्रम को महत्व दिया जाता है। शोध के उद्देश्यों तथा परिकल्पनाओं के आधार पर शोध का प्रारूप तैयार किया जाता है। शोध प्रारूप में निम्न तथ्यों को शामिल किया जाता है–

– जनसंख्या
– प्रतिदर्श
– शोध उपकरणों का चयन
– सांख्यिकीय प्रविधियों का चयन

शोध–विधि– प्रस्तावित शोध–प्रबन्ध में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग जायेगा।

प्रतिदर्श– प्रतिदर्श के उपवर्ग–

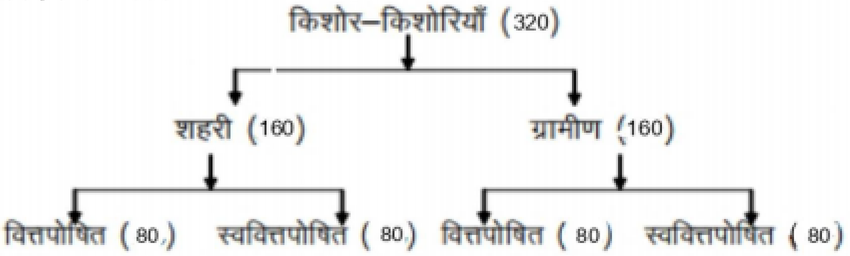

प्रतिदर्श के रूप में 320 किशोर–किशोरियों को शहरी (160 किशोर–किशोरियों) एवं ग्रामीण (160 किशोर–किशोरियों) क्षेत्र के 80 किशोर–किशोरियों को वित्तपोषित एवं 80 किशोर–किशोरियों स्ववित्तपोषित विद्यालयों से चयनित किया जायेगा।

लिंग– प्रस्तुत शोध में किशोर–किशोरियों दोनों को सम्मिलित किया जायेगा।

निवास स्थान– प्रस्तुत शोध में निवास स्थान के आधार पर किशोर एवं किशोरियों को शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में बाँटकर अध्ययन किया जायेगा।

स्कूल का प्रकार– प्रस्तुत शोध में स्कूल को वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित दो प्रकारों में बाँटकर उनमें अध्ययनरत् किशोर एवं किशोरियों का अध्ययन किया जायेगा।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

सामाजिक–आर्थिक स्तर– प्रस्तुत शोध में उच्च, मध्यम एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के किशोर–किशोरियों को सम्मिलित किया जायेगा।

प्रतिदर्श चयन की विधि– प्रतिदर्श के चयन करने की अनेक विधियाँ हैं, परन्तु प्रस्तावित अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा प्रतिदर्शन चयन के एक प्रमुख प्रकार सम्भाव्य प्रतिदर्शन की एक प्रमुख साधारण यादृच्छिक प्रतिदर्शन के माध्यम से माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को प्रतिदर्श के रूप में चुना जायेगा।

चुने गये प्रतिदर्श के रूप में 160 किशोर एवं 160 किशोरियों का चयन किया जायेगा।

प्रदत्त संकलन हेतु प्रस्तावित उपकरण– प्रदत्त संकलन हेतु निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा–

1. सामाजिक–आर्थिक स्तर– राजीव भारद्वाज– किशोर–किशोरियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर को ज्ञात करने के लिए राजीव भारद्वाज द्वारा निर्मित "सोशियो–इकोनॉमिक स्टेट्स स्केल" का प्रयोग किया जायेगा जिसमें किशोर–किशोरियों के सामाजिक, पारिवारिक, शैक्षिक, व्यवसाय, जाति एवं आय के आधार पर निर्मित किया गया है। इस मापनी को शहरी एवं ग्रामीण दोनों स्तरों को देखते हुए निर्मित किया गया है।

2. आत्म–प्रत्यय– आर. के. सारस्वत– डॉ0 राजकुमार सारस्वत द्वारा निर्मित 'आत्म–प्रत्यय प्रश्नावली' का प्रयोग जायेगा है। आत्म संकल्पना प्रश्नावली में सम्प्रत्यय के विभिन्न पहलुओं से सम्बन्धित कुल 48 प्रश्नों का समावेश किया गया है। इस उपकरण में छः आयाम थे जो कि निम्न क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं–

1. शारीरिक बोध
2. सामाजिक आत्मबोध
3. स्वभाव आत्मबोध
4. शिक्षा आत्मबोध
5. नैतिकता आत्मबोध
6. बौद्धिकता आत्मबोध

इस प्रकार प्रत्येक क्षेत्र में 8–8 कथन दिये गये है एवं प्रत्येक कथन के लिए लिकर्ट विधि के आधार पाँच बिन्दु मापनी पर उत्तर दिया गया है।

3. अवधारणा प्राप्ति–अनुराधा जोशी– किशोर–किशोरियों की अवधारणा प्राप्ति को मापने हेतु अनुराधा जोशी द्वारा निर्मित "कन्सेप्ट एटेन्मेण्ट टेस्ट" का प्रयोग किया जायेगा जो 14 से 18 आयु वर्ग के किशोर–किशोरियों के आधार पर निर्मित किया गया है। इसके अन्तर्गत कुल 36 कथनों का निर्माण किया गया है।

विश्लेषण की कार्य योजना– आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि, टी– अनुपात एवं एनोवा (प्रसरण) सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया जायेगा।

अध्ययन की सार्थकता– प्रस्तुत अध्ययन की सर्वाधिक सार्थकता उसके अध्ययन के लिए चयनित विशेष छात्र वर्ग से ही समझी जा सकती है। किशोरावस्था में औपचारिक शिक्षा का महत्व एवं उसके आधार पर किशोरों का निर्माण को शोधकर्ता ने महत्वपूर्ण माना, अतः अध्ययन के परिणामों की सार्थकता के प्रति शोधकर्ता अस्वस्त है। इसके अतिरिक्त भारत जैसे विभिन्नतावादी देश में अध्ययन के आधार के रूप लिंग, सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं विद्यालयों के प्रकार को चयनित करने, प्राप्त परिणाम सार्थक एवं उपयोगी होंगे। प्रस्तावित कार्य शोध अध्ययन में प्रथम अध्याय– प्रस्तावना का कार्य प्रारम्भ किया जायेगा तत्पश्चात् उसमें निहित चरों के आधार पर द्वितीय अध्याय–सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण तैयार किया जायेगा। दो अध्यायों को पूर्ण करने के पश्चात अध्ययन में प्रयुक्त चरों के आधार प्रस्तावित उपकरणों की सहायता से उपर्युक्त सांख्यिकी विधियों से किया जायेगा।

उत्तरदाताओं का संकलन किया जायेगा तथा प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण आँकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण के आधार पर परिणाम एवं व्याख्या प्रस्तुत किया जायेगा और परिणामों के आधार पर निगमित निष्कर्षो के आधार पर निहितार्थ तथा भविष्य में आगामी अध्ययन हेतु सुझाव प्रस्तुत किया जायेगा।

प्रस्तावित अध्याय– प्रस्तावित शोध प्रबन्ध का अध्यायीकरण–

1. प्रथम अध्याय	परिचय
2. द्वितीय अध्याय	साहित्य समीक्षा
3. तृतीय अध्याय	शोध प्रविधि (शोध अभिकल्प)
4. चतुर्थ अध्याय	आँकड़ों का विश्लेषण
5. पंचम अध्याय	सारांश एवं निष्कर्ष
6. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	
7. शोध–सारांश	

Its relevance to present day problem and need to the society- किशोरावस्था को संघर्ष ,तनाव,तूफान व विरोध की अवस्था कहा जाता है। किशोरावस्था मानव जीवन की निर्णायक अवस्था मानी जाती है। इस अवस्था में किशोर– किशोरियों को मानसिक अंतर्द्वंद का सामना करना पड़ता है। वह अपनी समस्याओं को परिवार के सदस्यों से साझा नहीं कर पाते जिससे मानसिक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

तनाव की स्थिति होते हैं। वह स्वयं की शक्तियों को नहीं जा पाते जिससे वह गलत दिशा की ओर उन्मुख हो जाते हैं।गलत संगत में पड़कर अपना अहित कर बैठते हैं। इस आयुवर्ग वर्ग में देखा गया है कि अत्यधिक तनाव की स्थिति में किशोर एवं किशोरियां आत्महत्या तक कर लेते हैं। प्रस्तुत शोध समस्या किशोर एवं किशोरियों के वर्तमान सामाजिक–आर्थिक परिदृश्य, स्कूल वातावरण व लैंगिक समस्याओं को रेखांकित करते हुए समाज तथा इस आयु वर्ग के मार्गदर्शन में सहायक सिद्ध होगी ।

Contribution to the Listing knowledge– किशोर एवं किशोरियों के व्यवहार से जुड़े विभिन्न आयामों पर अब तक अनेकों शोध अध्ययन किए गए हैं तथा वर्तमान में भी हो रहे हैं। तेजी से बदलते शैक्षिक व वैश्विक परि.श्य में नित नई समस्याएं व आवश्यकताएं जन्म लेती हैं तथा उन विषयों पर तत्कालीन परि.श्य में अध्ययन आवश्यक होता है, जिससे नई परिस्थितियों से बाहर निकल कर समाधान किया जा सके। प्रस्तुत शोध समस्या वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इस आयु वर्ग के विभिन्न आयामों का अध्ययन कर किशोर व किशोरियों के लिए सुझाव प्रस्तुत कर मार्गदर्शन करने में सक्षम होगी तथा वर्तमान ज्ञान में कुछ नया तथ्य जोड़ने में सहायक होगी।

Future work- किशोरावस्था जीवन का एक कठिन काल है। इस अवस्था के विभिन्न प्रत्ययों, व्यवहारों पर अब तक अनेकों अनुसंधान कार्य किए गए हैं तथा इस पर अनुसंधान कार्य करने की प्रासंगिकता सदैव बनी रहेगी। प्रस्तुत शोध समस्या उसी कार्य की एक कड़ी मात्र है। किशोर– किशोरियों के जीवन से जुड़े विषय भविष्य में भी शोध के विषय बने रहेंगे जिस पर आगे अध्ययन किया जाना आवश्यक होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. शुक्ला, बाल गोविन्द (2017). स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों के भाषायी सम्प्रत्यय निर्माण योग्यता का उनके अध्ययन आदत से सम्बन्ध का एक अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, राजा हरपाल सिंह पी०जी० कालेज, सम्बद्ध वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल वि०वि०, जौनपुर।
2. रामकृष्ण के. (2006). स्कूलिस्टक मोटिवेशन ऑफ सेकेण्डरी स्कूल पीपुल्स इन रिलेशन टू इंटेलीजेन्स, सेल्फ कन्सेट क्लासरूम कलाईगेट एण्ड पैरेन्टल इन्वॉल्वमेण्ट पी–एच.डी. एजूकेशन यूनिवर्सिटी ऑफ कालीकट।
3. नदण साहेबलाल माही (2011) ए स्टडी ऑफ इनवायरमेण्टल अवेयरनेस ऑफ सेकेण्डरी टीचर ट्रेनिज इन रिलेशन टू देयर डिमोग्राफिक, वैरियबल्स, पर्सनालिटी फैक्टर्स सेल्फ कन्सेप्ट एण्ड स्टडी हैबीट्स, पी–एच. डी. शिवशास्त्र कर्नाटक यूनिवर्सिटी भरवाद।
4. डोगरा, रहमतु अब्दुल्लाही (2015) रिलेशनशिप एमंग सोशल इन्वमिन्टल सपोर्ट, ऐकेडमिक सेल्फ कन्सेप्ट एण्ड ऐकेडमिक परफार्मेन्स ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स इन जरिया मैट्रोपोलिस डिपार्टमेन्ट ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी एण्ड काउन्सिलिंग फैकल्टी ऑफ एजुकेशन, अहमद बेल्तु यूनिवर्सिटी जरिवा।
5. गोनी एवं बेलो (2015) पैरेन्टल सोशियो–इकोनोमिक स्टेट्स सेल्फ–कोष्ट एण्ड जेण्डर डिफरेन्सेस ऑफ स्टूडेन्ट्स ऐकेडमिक परफॉर्मेन्स इन ब्रोनो स्टेट कॉलेज ऑफ एजूकेशन इन्पलिकेशन्स फॉर काउन्सिल जर्नल ऑफ एजूकेशन एण्ड प्रैक्टिस (ऑनलाइन) वाल्यूम–7 नं0 14, 2016.
6. बंसल, अदिति (2016) कोरिलेशन बिट्विन फैमिली इन्वायरमेण्ट एण्ड सेल्फ स्टीम ऑफ एडोलसेण्ट, द इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ इण्डियन सॉइकोलॉजी, बॉ० ३. नं० पृ० 129–137.
7. मुश्ताक, सबरीना एवं रानी, गीता (2018). इफेक्ट ऑफ सोशल मैच्युरिटी एण्ड सेल्फ– कान्सेप्ट ऑफ ऐकेडमिक एचिवमेन्ट ऑफ सेकेण्डरी स्कूल : स्टूडेन्ट्स ऑफ डिस्ट्रिक्ट बुदगाम (जे. एण्ड के.), इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस एजुकेशन एण्ड रिसर्व वायू इस्यू पृ० 13–18.
8. लॉरेन्स ए.एस. अरूल एवं विमला. ए. (2013) सेल्फ कन्सेप्ट एण्ड एचिवमेण्ट मोटिवेशन ऑफ हाईस्कूल स्टूडेन्ट्स लुक्स जर्नल ऑफ एजुकेशन, वॉ० 1, इश्शू–1, पृ0सं0 141–146.
9. सिंह, पुष्पराज एवं सिंह, जय (2017), रीवा संभाग में शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्रों की आत्मसम्प्रत्य एवं उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिस्पलनरी एजुकेशन एण्ड रिसर्च, वॉ० 2. इश्शू–2, पृ0 74–78.
10. हाफिज, कसवार (2016). लर्निंग स्टाइल एण्ड सेल्फ कन्सेप्ट ऑफ हाई एण्ड लो क्रियेटिव स्टूडेन्ट्स ऑफ नवोदय विद्यालय स्कूल्स ऑफ कश्मीर थैली, एन इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिस्प्लिनरी रिसर्च II (1) 1–141.
11. देवेन्द्र (2018) माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम विद्यार्थियों के आत्म–सम्प्रत्यय, सामाजिक अभिक्षमता तथा समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन, चेतना इण्टरनेशनल एजुकेशनल जर्नल वॉल्यूम– 1. पृ० 204–209.

*****